# रसों से संबंधित ऑब्जेक्टिव प्रश्न

1. मातहिं पितहिं उरिन भये नीके।
गुरु ऋण रहा सोच बड़ जी के॥
इस पद में रस है—
(क) रौद्र (ख) वीर
(ग) हास्य (घ) शृंगार

2. "साजि चतुरंग सैन अंग में उमंग धारि, सरजा सिवाजी जंग जीतन चलत है", इन पंक्तियों में निहित रस का नाम है—
(क) रौद्र (ख) अद्भुत
(ग) वीर (घ) शृंगार

3. देखि रूप लोचन ललचाने। हरसे जनु निज निधि पहचाने ।।
लोचन मग रामहिं उर लानी। दीन्हें पलक कपाट सयानी ।।
उपर्युक्त काव्य-पंक्तियों में रस है—
(क) वीर (ख) शृंगार (ग) हास्य (घ) करुण

4. "ऐसी मूढ़ता या मन की।
परिहरि रामभगति सुर सरिता आस करत ओस कन की।"
इस पद में रस है—
(क) करुण (ख) शृंगार (ग) वीर (घ) शान्त

5. 'सूर अरुन अधरनि की सोभा, बरनत बरनि न जाय।' इस पद में निहित सही रस का नाम लिखिए—
(क) शृंगार (ख) वात्सल्य (ग) वीर (घ) शान्त

6. जो घनीभूत पीड़ा थी, मस्तक में स्मृति सी छायी।
दुर्दिन में आँसू बनकर, वह आज बरसने आयी ।।
इस पद्य में रस है—
(क) शृंगार (ख) वीर (ग) शान्त (घ) करुण

7. निसिदिन बरसत नैन हमारे।
सदा रहति बरषा ऋतु हम पर जब तैं स्याम सिधारे ।।
पद्यांश में रस है—
(क) वीर (ख) भयानक
(ग) वात्सल्य (घ) वियोग शृंगार

8. "बैठी खिन्ना यक दिवस वे गेह में थीं अकेली ।
आके आँसू दृग-युगल में थे धरा को भिगोते ।"
उक्त अवतरण में कौन-सा रस है ?
(क) शान्त (ख) करुण (ग) वियोग शृंगार (घ) रौद्र

9. "सिर पर बैठा काग, आँखि दोउ खात निकारत ।
खींचत जीभहिं स्यार, अतिहिं आनँद उर धारत ।"
उपर्युक्त अवतरण में रस है—
(क) वीभत्स (ख) रौद्र (ग) अद्‌भुत (घ) भयानक

10. पापी मनुज भी आज मुख से राम-राम निकालते ।
देखो भयंकर भेड़िए भी, आज आँसू ढालते ।।
इन पंक्तियों में कौन-सा रस है ?
(क) वीभत्स (ख) रौद्र (ग) अद्‌भुत (घ) भयानक

11. अब लौं नसानी अब न नसैहौं ।
राम कृपा भव निसा सिरानी जागे फिर न डसैहौं ।।
इन पंक्तियों में कौन-सा रस है ?
(क) शान्त (ख) अद्‌भुत (ग) करुण (घ) शृंगार

12. "जहाँ सुमति तहँ संपति नाना, जहाँ कुमति तहँ विपति निदाना" पद में कौन-सा रस है ?
(क) करुण (ख) भयानक (ग) शृंगार (घ) शान्त

13. फहरी ध्वजा, फड़की भुजा, बलिदान की ज्वाला उठी।।
निज मातृभूमि के मान में, चढ़ मुण्ड की माला उठी।।
उपर्युक्त पद में रस है—
(क) करुण (ख) वीर (ग) वीभत्स (घ) भयानक

14. "इहाँ उहाँ दुइ बालक देखा, मति भ्रम मोर कि आन बिसेखा।।" पद में प्रयुक्त रस का नाम है—
(क) शृंगार (ख) अद्‌भुत
(ग) भक्ति (घ) शान्त

15. कहूँ हाड़ परौ, कहूँ जरौ अधजरो माँस,
कहूँ गीध भीर, माँस नोचत अरी अहै।।
उपर्युक्त पद में कौन-सा रस है?
(क) हास्य (ख) वीभत्स (ग) भयानक (घ) रौद्र

16. स्याम और सुन्दर दोउ जोरी। निरखति छवि जननी तृन तोरी।।
उपर्युक्त पद में कौन-सा रस है ?

(क) शान्त (ख) वत्सल (ग) शृंगार (घ) करुण

17. अद्‌भुत रस का स्थायी भाव क्या है ?

(क) उत्साह (ख) आश्चर्य (ग) क्रोध (घ) जुगुप्सा

18. वीभत्स रस का स्थायी भाव है—

(क) क्रोध (ख) शोक (ग) भय (घ) जुगुप्सा

19. शान्त रस का स्थायी भाव है—

(क) जुगुप्सा (ख) निर्वेद (ग) शोक (घ) विस्मय

20. शृंगार रस का स्थायी भाव है—

(क) क्रोध (ख) हास्य (ग) रति (घ) करुण

21. भयानक रस का स्थायी भाव है—

(क) क्रोध (ख) शोक (ग) उत्साह (घ) भय

22. हास्य रस का स्थायी भाव है—
(क) शोक (ख) विस्मय (ग) निर्वेद (घ) हास

23. आचार्यों ने संचारी भावों की संख्या निश्चित की है—
(क) 32 (ख) 33 (ग) 34 (घ) 36

24. स्थायी भावों को उद्दीप्त अथवा तीव्र करने वाला कारण कहलाता है—
(क) आलम्बन विभाव (ख) अनुभाव
(ग) संचारी भाव (घ) उद्दीपन विभाव

25. सूर्यास्त से पहले न जो मैं कल जयद्रथ वध करूँ।
तो शपथ करता हूँ स्वयं मैं ही अनल में जल मरूँ।।

26. राम को रूप निहारति जानकी, कंकण के नग की परछाईं।
यातै सबै सुधि भूलि गई, कर टेक रही पर टारत नाहीं।।

27. कहत नटत रीझत खिझत, मिलत खिलत लजियात।
भरे भौन मा करत है, नैननु ही सौं बात।।

शृंगार - रति

28. अति रिस बोले वचन कठोरा, कहु जड़ जनक धनुष के तोरा।
बेगि देखाउ मूढ़ न त आजू, उलटहुँ महि जहँ लगि तव राजू ।।

रौद्र (क्रोध/आवेश)
वीर
उत्साह

29. "सदियों से ठंडी बुझी राख सुगबुगा उठी,
मिट्टी सोने का ताज पहन इठलाती है।
दो राह समय के रथ का घर-घर नाद सुनो,
सिंहासन खाली करो कि जनता आती है।"
इन पंक्तियों में कौन-सा रस है? और क्यों?

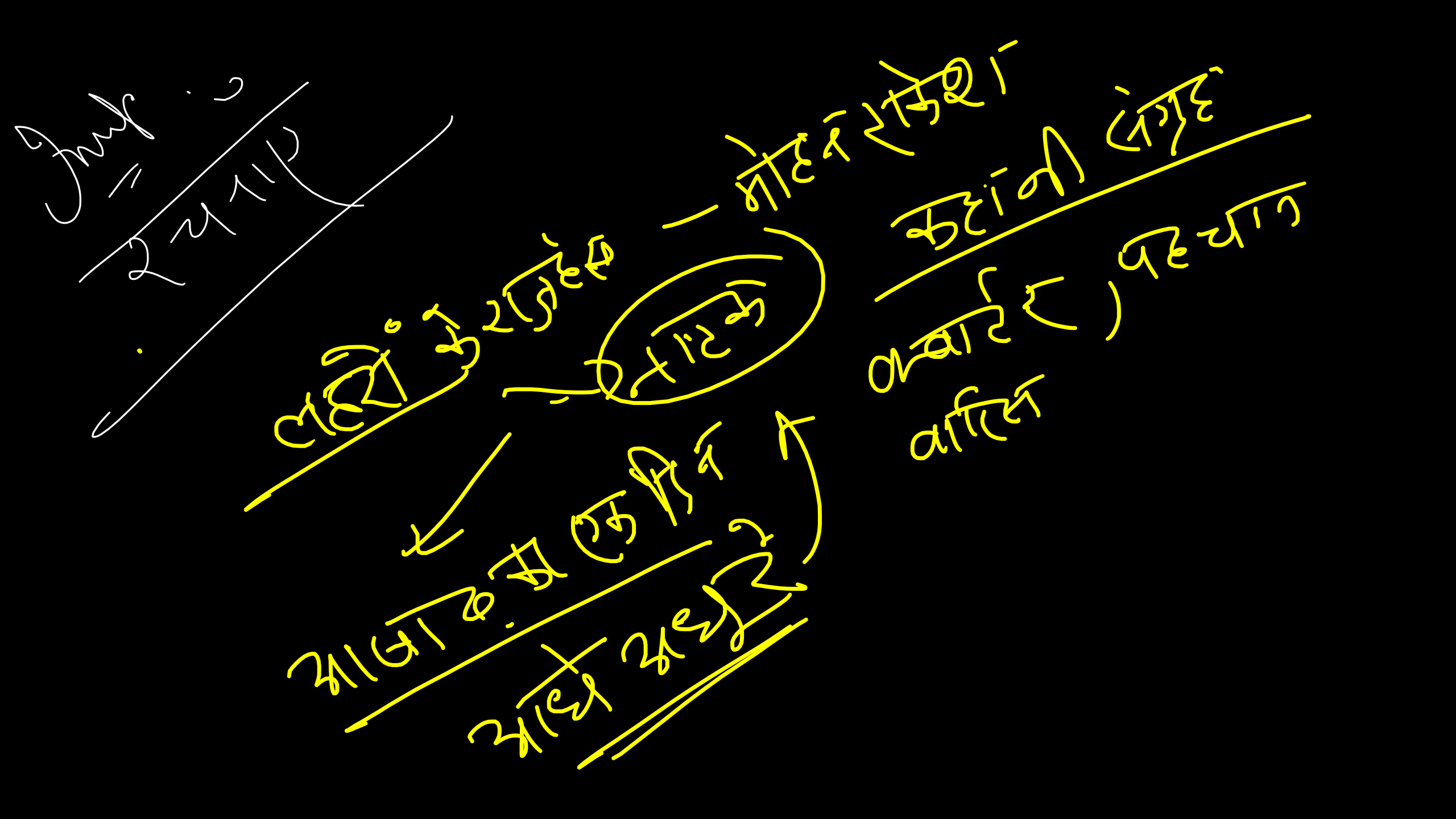

Imp :
२ याद

लहरों के राजहंस — मोहन राकेश

नाटक

आषाढ़ का एक दिन

आधे अधूरे

कहानी संग्रह

क्वार्टर ( ) पहचान

वारिस